शोध मंथन Vol. XVI No.3 July.- Sept. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvi-june-2025-no3*

भारतीय ज्ञान परम्परा में पंचमहाभूत सिद्धान्त एवं सतत् विकास

प्राप्तिः 05.09.2025
स्वीकृतः 17.09.2025

74

अनिल कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय,
श्री रामस्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय,
लखनऊ–देवा रोड, बाराबंकी, उ0प्र0
ईमेलः *anilkumar.hum@srmu.ac.in*

बेचा लाल
शोधछात्र(समाजशास्त्र विभाग)
मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय,
श्री रामस्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय,
लखनऊ–देवा रोड, बाराबंकी, उ0प्र0

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय संस्कृति और दर्शन में उल्लिखित पांच मूल तत्व आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी के महत्व को तलाशना तथा समकालीन समाज हेतु प्रस्तुत करना है। वैदिक वाङ्मय में हम इन्हें पंचमहाभूत के रूप में भी जानते हैं, जिन्हें केंद्र में रखकर पारंपरिक और वैदिक ज्ञान को समकालीन वैज्ञानिक समझ के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। इसका उद्देश्य प्राचीन और पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकृत करके इन पंचमहाभूतों (पांच तत्वों) की व्यापकता पर सामान्य समझ विकसित करना है। यह एक ज्ञात तथ्य है कि पृथ्वी के जैविक विकास में जल महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भी स्पष्ट है कि इन सभी पांच तत्वों में एक अंतर्निहित संबंध है जो पृथ्वी के पोषण और विकास के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में काम करता है। वर्तमान आधुनिकता के दौर में हम अनियोजित विकास की अंधी दौड़ में आने वाली पीढ़ियों, वनस्पतियों एवं पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करते जा रहे हैं। धरती और मानवता के लिए हमें आधुनिक विज्ञान के साथ पारम्परिक ज्ञान का एकीकरण करते हुए जनसामान्य तक पहुंचाना होगा।

मुख्य बिंदु

आयुर्वेद, जलतत्व, पारिस्थितिकी तंत्र, पृथ्वीतत्व, समर्थ गंगा।

1. प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति और दर्शन के पांच मूलभूत तत्व पृथ्वी, जल, तेज (अग्नि), आकाश (अंतरिक्ष या ईथर), और वायु, माने गए हैं। यह पांचों तत्व मिलकर ब्रह्माण्ड की नींव रखते हैं। अथर्ववेद में इस तथ्य पर जोर देकर कहा गया है कि ब्रह्माण्ड का निर्माण इन पांच अनिवार्य मूलभूत

तत्वों के संयोजन का परिणाम है। ऐसा कहा जाता है कि ब्रह्माण्ड में जीवन का अस्तित्व इन पांच मूल तत्वों से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है। प्राचीन उपनिषद ईशावास्य उपनिषद का प्रथम श्लोक अस्तित्व की संपूर्णता और उसकी अवधारणा को व्यक्त करता है।

ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पुर्णमुदच्यते
पूर्णश्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

ऊँ अनंत है, और यह (ब्रह्मांड) अनंत है। अनंत से अनंत की प्राप्ति होती है। (तब) अनंत (ब्रह्मांड) की अनंतता लेते हुए, वह अनंत के रूप में अकेला रहता है। ऊँ शांति! शांति! शांति! (सनातनत्व, 2022)।

यद्यपि इस अनन्त ब्रह्मांड में सभी तत्व मौजूद हैं, फिर भी इनके संयोजन में असंतुलन से विकार उत्पन्न होने लगते हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथ आयुर्वेद में यही पाँच तत्व (पंचमहाभूत के रूप में संदर्भित) अलग–अलग संयोजनों में मानव शरीर के तीन मूल द्रव्यों का निर्माण करते हैं। तीन द्रव्य; वात्, पित्त और कफ के असंतुलन से उत्पन्न दोषों को सामूहिक रूप से 'त्रिदोष' कहा जाता है और वे प्रत्येक प्रमुख दोष के लिए पाँच उप–दोषों के साथ शरीर के मूलभूत शारीरिक प्रकार्यों को नियंत्रित करते हैं। आयुर्वेद का मानना है कि मानव शरीर में सप्तधातु (सात ऊतक) रस (ऊतक द्रव), मेद (वसा और संयोजी ऊतक), रक्त (खून), अस्थि (हड्डियाँ), मज्जा, मांस (मांसपेशी), और शुक्र (वीर्य) और शरीर के तीन मल (अपशिष्ट उत्पाद) होते हैं, अर्थात पुरीष (मल), मूत्र (पेशाब) और स्वेद (पसीना)। वात, कोशिकीय परिवहन, इलेक्ट्रोलाइट संतुलन, अपशिष्ट उत्पादों के निश्कासन को बनाए रखता है और इसका प्रभाव से सूखापन बढ़ जाता है। पित्त शरीर के तापमान, ऑप्टिक तंत्रिका समन्वय और भूख और प्यास प्रबंधन को नियंत्रित करता है। शारीरिक ताप वृद्धि की स्थिति पित्त को बढ़ाती है। मीठे और वसायुक्त भोजन के कारण कफ दोष बढ़ता है और यह जोड़ों को उचित कार्य करने के लिए चिकनाई प्रदान करता है। माना जाता है कि शरीर का अपचय वात द्वारा, चपापचय पित्त द्वारा और उपचय कफ द्वारा नियंत्रित होता है (हेनरिक एवं अन्य 2004, उद्धृत्– जायसवाल, और विलियम्स, 2016)।

रसाऽसं सृङ्गमांसमेदो अस्थि मज्जा शुक्राणु धातवः सप्त दूश्याः मला। – (अ.द.सू.१)

1.1 अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन और पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकृत करके पंचमहाभूतों (ब्रह्माण्ड के पांच मूलभूत तत्वों) की व्यापकता पर सामान्य समझ विकसित करना है। इस अध्ययन से मानव के सतत् विकास में आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी की महत्ता को ज्ञात करना है।

1.2 अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें वैदिक ग्रंथों, उपनिषदों, भग्वद्गीता एवं विभिन्न शोध–पत्रों एवं वैज्ञानिकों के विचार शामिल किये गये हैं।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा मे पंच महाभूत सिद्धान्त

आयुर्वेदिक विज्ञान शरीर, आत्मा और मन की अवधारणा को पंचमहाभूत अवधारणा के आधार पर समझने का प्रयास करता है। इस अवधारणा के आधार पर, व्यक्तियों को विशिष्ट विशेषताओं के साथ तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। यह श्रेणियां कफ, पित्त और वात् हैं। कफ विशेषताओं वाले लोगों में जल और पृथ्वी उनके प्रमुख घटक हैं। पित्त विशेषताओं वाले लोगों में अग्नि होती है और वात् विशेषताओं वाले लोगों में वायु और आकाश उनके प्रमुख घटक होते हैं। इस प्रकार, शरीर और अस्तित्व के विभिन्न क्रियाकलाप और संरचनाएं पंचमहाभूत द्वारा बहुत अच्छी तरह से नियंत्रित होती हैं (प्लेनेट आयुर्वेदा, 2024, चित्र–1)।

चित्र–1: ब्रह्मांड में पंचमहाभूत

स्रोत : https://www.planetayurveda.com/panchmahabhuta-concept/

इस आधार पर कहा जा सकता है कि संसार में, चाहे कोई पदार्थ जड़ हो या चेतन, सब कुछ पाँच महातत्वों से मिलकर बना है। हमारा मानव शरीर भी पाँच तत्वों से बना है। किसी भी पदार्थ में दिव्यता को प्रकट करने के लिए, आत्मा के अवतार, सर्वोच्च सत्ता की उपस्थिति आवश्यक है। इसे आध्यात्मिकता और तत्वों के बीच संबंधों पर निम्न तालिका में प्रस्तुत करते हैं (मिश्र, 2023)।

तालिका–1: भगिान अथाशतः भ + ग+ व + अ + न

भ = अर्थात भूमि अर्थात पृथ्वी ग = अर्थात गगन अर्थात आकाश आकाश व = अर्थात वायु अ= अर्थात अग्नि अर्थात आग न = अर्थात नीर अर्थात जल	भ = पृथ्वी तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। ग = आकाश तत्व और उसकी व्यापकता का प्रतिनिधित्व करता है। वा = महत्वपूर्ण ऊर्जा वायु का प्रतिनिधित्व करता है। अ = अग्नि और उसकी परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। न = जल और उसकी तरलता का प्रतिनिधित्व करता है।

स्रोत : मिश्र, (2023)

उपरोक्त तथ्यों को देखा जाय तो इन्हीं पांच तत्वों से भगवान की अवधारणा उभरी। इससे सिद्ध होता है कि इस धरती पर ये पांचों मूल तत्व मौजूद हैं, जिनसे निर्मित हमारा शरीर अमूल्य है, क्योंकि इसमें विकृतियों को दूर करने और उन्हें कम करने की असाधारण क्षमता है।

3. भारतीय दर्शन में जलतत्व की महत्ता

हमारा प्राचीन ज्ञान, आस्था और सांस्कृतिक परम्पराएं, समाजिक प्रथाएँ गंगा और अन्य नदियों के प्रति श्रद्धा, ज्ञान और बेहतर प्रबंधन से भरी हुई हैं। हमारे प्राचीन ज्ञान संग्रह का महत्व महाकाव्यों, जैसे ब्रह्म पुराण, मत्स्य पुराण और तथा भगवद गीता में वर्णित है। श्रीमद् भगवद् गीता के अध्याय 10, श्लोक 31 में वासुदेव कृष्ण संदेश देते हैं कि मैं पवित्र करने वाली वस्तुओं में वायु हूँ और शस्त्रधारियों में मैं भगवान राम हूँ। जलचरों में मैं मगरमच्छ हूँ तथा बहती नदियों में मैं गंगा हूँ।

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्।
झषाणां मकरश्चास्मि स्त्रोतसामस्मि जाह्ववी।।

इस प्रकार गंगा अपने जल के गुणों के कारण हमारी संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। गंगा के जल में पवित्रता, मधुरता, निर्मलता, अशुद्धियों को दूर करने की क्षमता, अचेतन से चेतना को जगाने की शक्ति और जठराग्नि के पाचक गुण हैं। यदि किसी नदी में जठराग्नि का जल है, तो वह गंगा का जल है। यही कारण है कि भारत देश के लगभग हर घर में आज भी गंगाजल अवश्य रहता है क्योंकि गंगा और उसका जल हमारे पारंपरिक ज्ञान और उससे जुड़ी आस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। जल सभी प्रकार के जीवन के लिए आवश्यक है। ऋग्वेद के अनुसार, मानव पर्यावरण के एक भाग के रूप में जल पाँच रूपों में पाया जाता है– 1. वर्षा जल (दिव्याः) 2. प्राकृतिक झरना (श्रवण्ति) 3. कुएँ और नहरें (खनित्रिमाः) 4. झीलें (स्वयंमजः) 5. नदियाँ (समुद्रार्थः) आदि। तैत्तिरीय, आरण्यक उपनिशद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में भी कुछ अन्य वर्गीकरण हैं जैसे पीने का जल, औषधीय जल, स्थिर जल आदि। छांदोग्य उपनिषद में जल के गुणों के बारे में बताया गया है। जल खुशी का स्रोत हैं और स्वस्थ जीवन जीने के लिए आधार है। यह सभी जैविक प्राणियों जैसे वनस्पति, कीड़े, पक्षी, जानवर, मनुष्य आदि के जीवन का आधार हैं। यहाँ तक कि पहाड़, पृथ्वी, वायुमंडल और आकाशीय पिंडों में भी जल मुख्य तत्व है (तिवारी, 162–163)।

आई.आई.टी. कानपुर के प्रोफेसर विनोद तारे (2023) ने पंचतत्व और जीवन विषयक संगोष्ठी में भारत की पवित्र नदी ''गंगा नदी – प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय'' विषय पर बोलते हुए गंगा नदी के महत्व एवं इसकी अंतर्निहित जटिलताओं को उजागर किया है। उन्होने 'समर्थ गंगा' के विभिन्न आयामों और महत्व पर विचार रखते हुए कहा कि गंगा शक्तिशाली और एक जीवनदायिनी नदी है। वह 'समर्थ गंगा' को पाँच आयामों के रूपों में देखते हैं।

1. 'अविरल गंगा' (निर्बाध गंगा) है, जो गंगा के निरंतर प्रवाह और अमर प्रकृति का प्रतीक है।
2. 'निर्मल गंगा' (शुद्ध गंगा) है, जो गंगा की स्वच्छता और पवित्रता की इच्छा को दर्शाता है।
3. 'समर्थ गंगा' का तीसरा रूप 'आरोग्य गंगा' (स्वस्थ गंगा) है, जो भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में गंगा के महत्व पर जोर देता है।

4. 'जन गंगा' (जनमानस की गंगा) है, जो गंगा के माध्यम से लोगों को जोड़ने पर केंद्रित है। और अंत में,
5. 'ज्ञान गंगा' (ज्ञान गंगा), जो गंगा से संबंधित ज्ञान और संरक्षण प्रयासों के एकीकरण पर जोर देता है।

आज हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी माँ गंगा के इन पाँच आयामों पर विचार करें और उनके व्यक्तिगत महत्व को समझें, जो सामूहिक रूप से नदी के सार और प्रभाव को परिभाषित करते हैं।

3.1 गंगा की पारिस्थितिकी एवं सतत् विकास

नदियाँ प्रकृति का अमूल्य उपहार हैं, जिसमें गंगा सबसे प्रमुख नदी है। इसलिए, जब हम प्रोफेसर तारे के अनुसार 'समर्थ गंगा' की बात करते हैं, तब हम हर छोटी–बड़ी नदी, उसकी सहायक नदियों, उसके पारिस्थितिकी तंत्र और जल विज्ञान चक्र को शामिल करते हैं। क्योंकि नदी के पारिस्थितिकी तंत्र में न केवल जलीय जीवन शामिल हैं, अपितु इसमें जल विज्ञान से जुड़ी भौतिक विशेषताएं भी होती हैं। जब हम इसके समग्र जल विज्ञान का अध्ययन करते हैं, तो हम छोटी–बड़ी सभी नदियों एवं जलस्रोतों के बीच के अंतर्संबंधों को स्वीकार करते हैं, क्योंकि गंगा कोई अलग–थलग नदी नहीं है, अपितु यह जल विज्ञान चक्र सार को परिभाषित करने का आधार है। इसलिए, हमें उन सभी नदियों, सहायक नदियों एवं जलस्रोतों के महत्व को समझना होगा जो न केवल धरती के ऊपर अपितु भूमि के भीतर अंतर्संबंधों का एक जाल बनाती हैं।

नदियाँ हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो न केवल हमारे भौगोलिक परिदृश्यों को अपितु समस्त प्राणि–जगत को भी प्रभावित करती हैं। नदियां स्वयं के संरक्षण और सतत प्रबंधन में सक्षम हैं, किन्तु मानव द्वारा अतिदोहन एवं जल के प्राकृतिक स्रोतों, मार्गों को विस्थापित करके सम्पूर्ण प्रकृति एवं सामाजिक पारिस्थितिकी का स्तर गंभीर संकट के चरण में पहुँच गया है। इसलिए, उनका संरक्षण और सतत प्रबंधन अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। भारत में, गंगा की कई सहायक नदियाँ लुप्त हो गई हैं, जबकि अन्य विलुप्त होने के कगार पर हैं। ऐसे में हमारे लिए नदियों और उनसे जुड़े पारिस्थितिकीय व्यवहारों के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाना अनिवार्य हो जाता है। इस दिशा में कुछ प्रयास आरम्भ हुए हैं, जिससे लुप्त हो चुकी नदियों, जल स्रोतों को खोजकर उनके अस्तित्व को पुनर्जीवित करने, उनकी पारिस्थितिकी को समझने और इन मुद्दों को तत्परता एवं सक्रिय भागीदारी के साथ संबोधित करने के प्रयास शामिल हैं।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह प्रयास केवल राजनीतिक आकांक्षाओं से परे है और इसके लिए सामूहिक इच्छाशक्ति और जिम्मेदार भागीदारी की आवश्यकता है। इस प्रयास में राजनेताओं, इतिहासकारों, भूगोलवेत्ताओं, इंजीनियरों, डॉक्टरों, शोधकर्ताओं और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को एक मंच पर आने की जरूरत है। उनके साथ–साथ मीडिया, स्थानीय शासन निकाय, गैर सरकारी संगठन, नागरिक समाज, राज्य सरकारें, केंद्र सरकार और अंतरराष्ट्रीय संगठन भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण महत्व रखते हैं।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.74

4. भारतीय दर्शन में पृथ्वी–तत्व की महत्ता

हमारी पृथ्वी में मौजूद सभी पदार्थ (जड़ अथवा चेतन) पंचमहाभूतों के संयोजन से ही बने हैं। मानव शरीर धरती पर मौजूद इन्हीं पाँच तत्वों से बना है। पंचमहाभूतों में विकृतियों को दूर करने तथा उन्हें संतुलित करने की असाधारण क्षमता है। आयुर्वेदिक ज्ञान के अनुसार जड़ी–बूटियों के चूर्ण से बना लेप, काढ़ा एवं रस आदि शरीर के प्रभावित अंग की विकृतियों को दूर करने और संतुलन को बहाल करने में मदद करता है, जिससे बीमारी कम होती है। यह प्राकृतिक खजाना जीवनदायी होने के साथ ही आजीविका के स्रोत एवं अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए जरूरी है। हालांकि, वर्तमान समय में हम पृथ्वी में मौजूद पंचमहाभूतों एवं उनके महत्व को भूल गए हैं। हमारे देश के औद्योगिक घराने धनलोलुपता के कारण धरती के प्राकृतिक वातावरण को क्षति पहुंचा रहे हैं। जिससे धरती में मौजूद जीवनकारी गुणों का ह्रास हो रहा है। हम नगरीकरण की अंधी दौड़ में कृषि योग्य भूमि, जंगलों एवं जलस्रोतों पर अतिक्रमण कर उन्हें कंक्रीट के जंगलों में तब्दील कर रहे हैं। हमारे किसान भी लोगों की जरूरतें पूरा करने व उपज बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों का अति उपयोग करने के साथ सिंचाई हेतु भूजल का अति दोहन कर रहे हैं। कारखानों से निकलने वाले कचरे एवं दूषित जल से धरती, नदियों एवं पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक असर पड़ा है।

पृथ्वी–तत्व में असंतुलन एवं उससे उत्पन्न समस्या से निपटने हेतु भूमि सुपोषण हेतु गौ आधारित कृषि–कार्य पर जोर देना होगा, जिसमें गायों, उनके बछड़ों/बैलों और खेतों को अपनी आजीविका के आवश्यक घटक के रूप में महत्व देना होगा। गोबर की खाद से उपजाऊ मिट्टी की उर्वरता के साथ पर्यावरण के अनुकूल खेती करने तथा पारंपरिक कृषि तकनीकों का उपयोग करके खराब हो रही मिट्टी को भी फिर से जीवंत किया जा सकता है। परिणामस्वरूप एक टिकाऊ और गाय–केंद्रित प्राकृतिक कृषि–प्रणाली का पुनर्जीवन आरम्भ होगा, जिसमें पृथ्वी पर मौजूद सभी जीवों की आवश्यकताओं को पूरा करने और उसे पोषण देने के लिए अपरिहार्य तत्व सुनिश्चत हो सकें (चौधरी, 2023)। धरती की महत्ता को बताने वाला अथर्ववेद का एक श्लोक बताता है कि–

"माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।।"

अथर्ववेद, काण्ड–12, सूक्त–9, ऋचा–12.

जिसका अर्थ है कि यह भूमि (पृथ्वी) हमारी माता है और हम सब इसके पुत्र हैं। 'पर्जन्य' अर्थात मेघ हमारे पिता हैं। और ये दोनों मिल कर हमारा 'पिपर्तु' अर्थात पालन करते हैं। यदि हम मानव धरती को माता की भांति संरक्षण एवं उसके पोषण का ध्यान नहीं रखेंगे तो वह हम सभी जीवों (जन्तुओं एवं वनस्पतियों) का भार सहन नही ंकर सकेगी तथा उसका रासायनिक संतुलन बिगड़ जायेगा। मृदा का पी.एच. मान एक महत्वपूर्ण रासायनिक गुण है। इससे मृदा के तमाम फसलोत्पादक गुणों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। यदि मृदा का पी.एच. मान 7 है तो यह उदासीन होगी। पी.एच. मान 7 से कम होने पर यह अम्लीय तथा 7 से अधिक होने पर यह क्षारीय हो जायेगी। यदि मृदा की विद्युत चालकता 4 से अधिक हो तो उसमें बीज अंकुरित नहीं होगा।

0..................	पी.एच–7	14
अम्लीय	उदासीन	क्षारीय

5. भारतीय दर्शन में वायु–तत्व की महत्ता

वैदिक ज्ञान हमें बताता है कि अंतरिक्ष पदार्थ कणों का निवास स्थान है, प्रकाश अंतरिक्ष ऊर्जा का निवास स्थान है और मध्यवर्ती अंतरिक्ष अंतरिक्ष क्षेत्र का निवास स्थान है। अंतरिक्ष के प्रमुख देवता वायु हैं। *जैमिनीय ब्राह्मण* में कहा गया है, 'वायु' अंतरिक्ष में चमकती है। अंतरिक्ष ऊर्जा का दूसरा रूप है और इसलिए, यजुर्वेद कहता है, 'वायु' में भेदने वाली चमक है। *शतपथ ब्राह्मण* में में वायु का अर्थ स्पष्ट किया गया है, 'सूर्य और शेष ब्रह्मांड' एक धागे में पिरोए गए हैं, वह धागा वायु है। इस आधार पर कहा जा सकता है, कि यहाँ वायु का अर्थ केवल हवा से नहीं हो सकता। यह जीवन वायु है, जिसके बारे में तैत्तरीय उपनिषद में कहा गया है। इसके अनुसार शरीर में पाँच प्रकार की वायु मौजूद है– प्राण वायु, व्यान वायु, अपान वायु, उदान वायु और समान वायु, शरीर में जीवन के रूप में निवास करती हैं। वैदिक ऋचाओं में वायु की अवधारणा और महत्व पर प्रकाश डाला गया है। ऋग्वेद में वायु की तुलना हमारे पिता, रक्षक से की गयी है जो औषधीय गुणों से युक्त है। जिसमें कहा गया है कि वायु औषधि के रूप में बहे और हमारा कल्याण करे और सुख प्रदान करे। ऐसी औषधीय गुणों वाली वायु अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सक है, जो प्रदूषण को नष्ट करती है और दुनिया में स्वास्थ्य और उल्लास, जीवन और जीवंतता प्रदान करती है (तिवारी, 163–164)।

हमारे देश के पहाड़ी क्षेत्र औषधीय वायु से भरे हुए हैं जिसमें जड़ी–बूटी के तत्व होते हैं। भग्वद्गीता के 15वें अध्याय में कहा गया है कि मैं ही पाचन–अग्नि के रूप में समस्त जीवों के शरीर में स्थित रहता हूँ, मैं ही प्राण वायु और अपान वायु को संतुलित रखते हुए चार प्रकार के (चबाने वाले, पीने वाले, चाटने वाले और चूसने वाले) अन्नों को पचाता हूँ।

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।
भग्वद्गीता, अध्याय–15.

वायु तत्वों के संरक्षण के लिए भी प्रभावी उपाय किए गए हैं, जिनमें प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रदूषणकारी ईंधन से संक्रमण और लगातार वनीकरण के प्रयास शामिल हैं। वर्तमान समय में इन पांच तत्वों में संतुलन स्थापित करने एवं सतत विकास के विभिन्न लक्ष्यों को हासिल करने हेतु बौद्धिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से बहस जारी है।

6. भारतीय दर्शन में आकाश–तत्व की महत्ता

आधुनिक पर्यावरणविद् ध्वनि या शोर प्रदूषण पर चर्चा करते हैं। आकाशतत्व और ध्वनि के बीच एक संबंध है। ध्वनि तरंगें विभिन्न आवृत्तियों पर आकाश में घूमती हैं। वैज्ञानिक आकाश को देख सकते थे, जो केवल पृथ्वी के आसपास ही मौजूद है, लेकिन तैत्तिरीय उपनिषद दो प्रकार के आकाशतत्व पर प्रकाश डालता है– एक शरीर के अंदर और दूसरा शरीर के बाहर। शरीर के अंदर के आकाशतत्व को मन का आसन माना जाता है। यजुर्वेद में मानव जाति के लिए एक दिलचस्प सलाह मिलती है कि आकाश की किसी भी चीज को नष्ट न करें और आकाश को प्रदूषित न करें। अंतरिक्ष की किसी भी चीज को नष्ट न करें। सूर्य देवलोक में चमकता है और हमें आकाश से रोशनी मिलती है। सूर्य की किरणें हमारी आंतरिक शक्ति को मजबूत करती हैं जो हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं। इस प्रकार वैदिक ऋचाओं में ईथर/ आकाशतत्व के महत्व और

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.74

देखभाल का खुले तौर पर उल्लेख किया गया है। आज दुनिया भर के देश अंतरिक्ष में अनेकों उपग्रह छोड़ रहे हैं, जिनका कचरा भविष्य में मानवता एवं सतत् विकास की राह में एक गम्भीर अवरोध सिद्ध होगा।

7. भारतीय दर्शन में अग्नितत्व की महत्ता

मनुष्य के शरीर की आयु, वर्ण, बल, निरोगता, उत्साह, शरीर की वृद्धि, कान्ति, ओज, तेज, अग्नियाँ और प्राण ये सभी देह की अग्नि (पाचक अग्नि) के प्रबल होने पर ही स्थिर रहते हैं। यदि जठराग्नि शांत हो जाये (नष्ट हो जाय) तो मनुष्य की मृत्यु हो जाती है और जठराग्नि में विकृति आ जाय तो मनुष्य रोगी हो जाता है। इसलिये अग्नि को आयु, वर्ण, बल आदि का मूल कहा गया है। शास्त्रों के अनुसार अग्नि 13 प्रकार की होती है, यथा– पाचकाग्नि या जठाराग्नि, सात धातवाग्नि एवं पाँच भूताग्नि (गायत्री परिवार, 2024)। इनमें संतुलन से ही मानव जाति एवं पर्यावरण नियंत्रित रह सकता है। जल पृथ्वी का रूप लेता है और अन्य भौतिक और सूक्ष्म तत्वों के साथ पृथ्वी से वापस अंतरिक्ष में चला जाता है, जिससे विभिन्न स्वादों का निर्माण होता है। अग्नि–तत्व द्वारा इन स्वादों के संरक्षण के माध्यम से, शरीर को पोषण मिलता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

पंचमहाभूतों में अंतर्निहित संबंध नाजुक संतुलन का एक सूचक है। इस अन्योन्याश्रयता में किसी भी प्रकार का असंतुलन हमारे जल स्रोतों और पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ सहित दुनिया भर के वैज्ञानिक पृथ्वी को प्रभावित करने वाले संकटों की पहचान कर उनको दुनिया के सामने लाने के प्रयास में लगे हुए हैं। हमारा संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र न केवल स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है अपितु मानव सभ्यता, जीवन शैली और अर्थव्यवस्थाओं के लिए अनिवार्य शर्त है। अतः पारिस्थितिकी–जल विज्ञान, भू–विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान के तरीकों के साथ–साथ वैदिक तरीकों पर भी ध्यान आकर्षित किया जाना जरूरी है, जिससे जल, समाज और पारिस्थितिकी तंत्र प्रक्रियाओं के बीच संबंधों में संतुलन कायम रखा जा सके। असंतुलन की दशा में सतत् विकास के विभिन्न पक्ष पीछे रह जायेंगे।

सन्दर्भ

1. अथर्ववेद, काण्ड–12, सूक्त–9, ऋचा–12।
2. चौधरी, कृष्ण (2023) पंचमहाभूत और भूमि सुपोषण, पंचतत्व एण्ड लाइफ, संगोष्ठी, टी.आर. सी. लॉ कॉलेज, सतरिख, जनपद–बाराबंकी, उत्तर प्रदेश (दिनाँक 16 अप्रैल, 2023)।
3. गायत्री परिवार, (2024) अग्नि, ऑल वर्ल्ड गायत्री परिवार,
4. मिश्र, उमाशंकर (2023) पंचतत्व में पृथ्वी तत्व की भूमिका, पंचतत्व एण्ड लाइफ, संगोष्ठी, टी.आर.सी. लॉ कॉलेज, सतरिख, जनपद–बाराबंकी, उत्तर प्रदेश (दिनाँक 16 अप्रैल, 2023)।
5. तारे, विनोद (2023). गंगा नदी – प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय, पंचतत्व एण्ड लाइफ, संगोष्ठी, टी.आर.सी. लॉ कॉलेज, सतरिख, जनपद–बाराबंकी, उत्तर प्रदेश (दिनाँक 16 अप्रैल, 2023)।
6. सनातनत्व (2022) ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं, ईश उपनिशद. https://www.sanatanatva.com/articles/om-purnamadah-purnamidam

7. सिविल–20 (2023) पंचतत्व एण्ड लाइफ, संगोष्ठी, टी.आर.सी. लॉ कॉलेज, सतरिख, जनपद–बाराबंकी, उत्तर प्रदेश (दिनाँक 16 अप्रैल, 2023)।
8. श्रीमद्भग्वद् गीता, अध्याय 15।
9. Heinrich M, Barnes J, Gibbons S, Williamson E. (2004). *Fundamentals of Pharmacognosy and Phytopharmacy*. Edinburgh: Churchill Livingstone.
10. Jaiswal, Y. S., and Williams, L. L. (2016). A glimpse of Ayurveda - The forgotten history and principles of Indian traditional medicine. *Journal of traditional and complementary medicine*, *7*(1), 50–53. https://doi.org/10.1016/j.jtcme.2016.02.002
11. https://www.awgp.org/en/literature/book/aayurved_ka_vyapak_kshetra/v1.16
12. Planet Ayurveda. (2024). Concept of Panchmahabhuta (Five Elements), https://www.planetayurveda.com/panchmahabhuta-concept/
13. Tiwari, Shashi (2010). Origin of Environmental Science from Vedas, *Sanskrit Vimarsh*, Vol. 2, Pg. 156-170.